الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ ع

उन से जो उन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं[87] बख़्शिश और बड़े सवाब का

اٰیاتها ١٨ ﴿٤٩ سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٦﴾ رکوعاتها ٢

सूरए हुजुरात मदनिय्या है, इस में अठ्ठारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا

ऐ ईमान वालो **अल्लाह** और उस के रसूल से आगे न बढ़ो[2] और **अल्लाह** से

اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا

डरो बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ

ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से[3] और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के

لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (ज़ाएअ़) न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो[4] बेशक वोह जो

87 : सह़ाबा सब के सब साहि़बे ईमान व अ़मले सालेह़ हैं इस लिये येह वा'दा सभी से है। **1 :** सूरए हुजुरात मदनिय्या है, इस में दो रुकूअ़ अठ्ठारह आयतें, तीन सो तेंतालीस कलिमे और एक हज़ार चार सो छिहत्तर ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी तुम्हें लाज़िम है कि अस्लन तुम से तक़्दीम वाक़ेअ़ न हो न क़ौल में न फ़े'ल में कि तक़्दीम करना रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के अदबो एह़तिराम के ख़िलाफ़ है, बारगाहे रिसालत में नियाज़ मन्दी व आदाब लाज़िम हैं। **शाने नुज़ूल :** चन्द शख़्सों ने ईदुद्दुह़ा के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से पहले क़ुरबानी कर ली तो उन को हुक्म दिया गया कि दोबारा क़ुरबानी करें और ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि बा'ज़े लोग रमज़ान से एक रोज़ पहले ही रोज़ा रखना शुरूअ़ कर देते थे उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और हुक्म दिया गया कि रोज़ा रखने में अपने नबी से तक़द्दुम न करो। (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) **3 :** या'नी जब हुज़ूर (बारगाहे रिसालत) में कुछ अ़र्ज़ करो तो आहिस्ता पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ करो, येही दरबारे रिसालत का अदबो एह़तिराम है। **4 :** इस आयत में हुज़ूर का इज्लालो इक्राम व अदबो एह़तिराम ता'लीम फ़रमाया गया और हुक्म दिया गया कि निदा करने में अदब का पूरा लिह़ाज़ रखें, जैसे आपस में एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हैं इस त़रह़ न पुकारें, बल्कि कलिमाते अदबो ता'ज़ीम व तौसीफ़ो तक्रीम व अल्क़ाबे अ़ज़मत के साथ अ़र्ज़ करो जो अ़र्ज़ करना हो कि तर्के अदब से नेकियों के बरबाद होने का अन्देशा है। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि येह आयत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास के ह़क़ में नाज़िल हुई, इन्हें सिक़्ले समाअ़त था (या'नी ऊंची आवाज़ से सुनते थे) और आवाज़ इन की ऊंची थी बात करने में आवाज़ बुलन्द हो जाया करती थी, जब येह आयत नाज़िल हुई तो ह़ज़रते साबित अपने घर में बैठ रहे और कहने लगे कि मैं अहले नार से हूं। हुज़ूर ने ह़ज़रते सा'द से उन का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि वोह मेरे पड़ोसी हैं और मेरे इल्म में उन्हें कोई बीमारी तो नहीं हुई, फिर आ कर ह़ज़रते साबित से इस का ज़िक्र किया साबित ने कहा : येह आयत नाज़िल हुई और तुम जानते हो कि मैं तुम सब से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हूं तो मैं जहन्नमी हो गया। ह़ज़रते सा'द ने येह ह़ाल ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि वोह अहले जन्नत से हैं।

www.dawateislami.net

يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ

अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास[5] वोह हैं जिन का दिल अल्लाह ने परहेज़ गारी

قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۳﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ

के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के

مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى

बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं[6] और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि

تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾ يٰۤاَيُّهَا

तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते[7] तो येह उन के लिये बेहतर था और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[8] ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًا

ईमान वालो अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो[9] कि कहीं किसी क़ौम को बे जाने ईज़ा

بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ﴿۶﴾ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ فِيْكُمْ

न दे बैठो फिर अपने किये पर पछताते रह जाओ और जान लो कि तुम में

رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ

अल्लाह के रसूल हैं[10] बहुत मुआ़मलों में अगर येह तुम्हारी ख़ुशी करें[11] तो तुम ज़रूर मशक़्क़त में पड़ो लेकिन अल्लाह ने तुम्हें

5 : बराहे अदबो ता'ज़ीम। **शाने नुज़ूल :** आयए ''يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ'' के नाज़िल होने के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और बा'ज़ और सहाबा ने बहुत एह़तियात़ लाज़िम कर ली और ख़िदमते अक़्दस में बहुत ही पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ मा'रूज़ करते, उन ह़ज़रात के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। **6 शाने नुज़ूल :** येह आयत वफ़्दे बनी तमीम के ह़क़ में नाज़िल हुई कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में दोपहर के वक़्त पहुंचे जब कि हुज़ूर आराम फ़रमा रहे थे, उन लोगों ने हुजरों के बाहर से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को पुकारना शुरूअ़ किया, हुज़ूर तशरीफ़ ले आए, उन लोगों के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और इज्लाले शाने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का बयान फ़रमाया गया कि बारगाहे अक़्दस में इस त़रह़ पुकारना जहल व बे अ़क़्ली है और उन लोगों को अदब की तल्क़ीन की गई। **7 :** उस वक़्त वोह अ़र्ज़ करते जो उन्हें अ़र्ज़ करना था, येह अदब उन पर लाज़िम था, इस को बजा लाते। **8 :** उन में से उन के लिये जो तौबा करें। **9 :** कि सह़ीह़ है या ग़लत़। **शाने नुज़ूल :** येह आयत वलीद बिन उ़क़्बा के ह़क़ में नाज़िल हुई कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इन को बनी मुस्त़लिक़ से सदक़ात वुसूल करने भेजा था और ज़मानए जाहिलिय्यत में इन के और उन के दरमियान अ़दावत थी, जब वलीद उन के दियार के क़रीब पहुंचे और उन्हें ख़बर हुई तो इस ख़याल से कि वोह रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के भेजे हुए हैं बहुत से लोग ता'ज़ीमन उन के इस्तिक़्बाल के वासित़े आए, वलीद ने गुमान किया कि येह पुरानी अ़दावत से मुझे क़त्ल करने आ रहे हैं, येह ख़याल कर के वलीद वापस हो गए और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ कर दिया कि हुज़ूर उन लोगों ने सदक़ा को मन्अ़ कर दिया और मेरे क़त्ल के दरपै हो गए, हुज़ूर ने ख़ालिद बिन वलीद को तह़क़ीक़े ह़ाल के लिये भेजा, ह़ज़रते ख़ालिद ने देखा कि वोह लोग अज़ानें कहते हैं नमाज़ पढ़ते हैं और उन लोगों ने सदक़ात पेश कर दिये, ह़ज़रते ख़ालिद येह सदक़ात ले कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि येह आयत आ़म है इस बयान में नाज़िल हुई है कि फ़ासिक़ के क़ौल पर ए'तिमाद न किया जाए। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि एक शख़्स अगर आ़दिल हो तो उस की ख़बर मो'तबर है। **10 :** अगर तुम झूट बोलोगे

اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَ زَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَ كَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَ الْفُسُوْقَ

ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुक्म उ़दूली और ना फ़रमानी

وَ الْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ﴿۷﴾ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ نِعْمَةً ؕ وَ اللّٰهُ

तुम्हें ना गवार कर दी ऐसे ही लोग राह पर हैं[12] अल्लाह का फ़ज़्ल और एह़सान और अल्लाह

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۸﴾ وَ اِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا

इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है और अगर मुसल्मानों के दो गुरौह आपस में लड़ें तो उन में सुल्ह़

بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى

कराओ[13] फिर अगर एक दूसरे पर ज़ियादती करे[14] तो उस ज़ियादती वाले से लड़ो यहां तक कि

تَفِيْٓءَ اِلٰۤى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَ اَقْسِطُوْا ؕ

वोह अल्लाह के हुक्म की त़रफ़ पलट आए फिर अगर पलट आए तो इन्साफ़ के साथ उन में इस्लाह़ कर दो और अ़द्ल करो

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۹﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا

बेशक अ़द्ल वाले अल्लाह को प्यारे हैं मुसल्मान मुसल्मान भाई हैं[15] तो अपने दो भाइयों

بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ ع يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

में सुल्ह़ करो[16] और अल्लाह से डरो कि तुम पर रह़मत हो[17] ऐ ईमान वालो

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنْ

न मर्द मर्दों से हंसें[18] अ़जब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों[19] और न औ़रतें

الثلث

तो अल्लाह तआ़ला के ख़बरदार करने से वोह तुम्हारा इफ़्शाए ह़ाल कर के तुम्हें रुस्वा कर देंगे। **11 :** और तुम्हारी राय के मुत़ाबिक़ हुक्म दे दें **12 :** कि त़रीके़ ह़क़ पर क़ाइम रहे। **13 शाने नुज़ूल :** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم दराज़ गोश पर सुवार तशरीफ़ ले जा रहे थे, अन्सार की मजलिस पर गुज़र हुवा, वहां थोड़ा सा तवक्कुफ़ फ़रमाया, उस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो इब्ने उबय ने नाक बन्द कर ली, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया कि ह़ुज़ूर के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू रखता है, ह़ुज़ूर तो तशरीफ़ ले गए, इन दोनों में बात बढ़ गई और इन दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथा पाई तक नौबत पहुंची तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और उन में सुल्ह़ करा दी, इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई। **14 :** ज़ुल्म करे और सुल्ह़ से मुन्किर हो जाए। **मस्अला :** बाग़ी गुरौह का येही हुक्म है उस से क़िताल किया जाए यहां तक कि वोह जंग से बाज़ आए। **15 :** कि आपस में दीनी राबित़ा और इस्लामी मह़ब्बत के साथ मरबूत़ (जुड़े हुए) हैं, येह रिश्ता तमाम दुन्यवी रिश्तों से क़वी तर है। **16 :** जब कभी उन में निज़ाअ़ (रन्जिश) वाक़ेअ़ हो। **17 :** क्यूं कि अल्लाह तआ़ला से डरना और परहेज़ गारी इख़्तियार करना मोमिनीन की बाहमी मह़ब्बत व मुवद्दत का सबब है और जो अल्लाह तआ़ला से डरता है अल्लाह तआ़ला की रह़मत उस पर होती है। **18 शाने नुज़ूल :** इस आयत का नुज़ूल कई वाक़िओं में हुवा **पहला वाक़िआ़** येह है कि साबित इब्ने क़ैस बिन शम्मास को सिक़्ले समाअ़त था, जब वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की मजलिस शरीफ़ में ह़ाज़िर होते तो सह़ाबा उन्हें आगे बिठाते और उन के लिये जगह ख़ाली कर देते ताकि वोह ह़ुज़ूर के क़रीब ह़ाज़िर रह कर कलामे मुबारक सुन सकें, एक रोज़ उन्हें ह़ाज़िरी में देर हो गई और मजलिस शरीफ़ ख़ूब भर गई, उस वक़्त साबित आए और क़ाइदा येह था कि जो शख़्स ऐसे वक़्त आता और मजलिस में जगह न पाता तो जहां

www.dawateislami.net

نِسَآءٍ عَسٰۤى اَنْ یَّكُنَّ خَیْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَ لَا تَلْمِزُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ لَا تَنَابَزُوْا

औरतों से दूर नहीं कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों[20] और आपस में ता'ना न करो[21] और एक दूसरे के बुरे

بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِ ۚ وَ مَنْ لَّمْ یَتُبْ

नाम न रखो[22] क्या ही बुरा नाम है मुसल्मान हो कर फ़ासिक़ कहलाना[23] और जो तौबा न करें

فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۱﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ

तो वोही ज़ालिम हैं ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से

الظَّنِّ٘ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوْا وَ لَا یَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ

बचो[24] बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है[25] और ऐब न ढूंढो[26] और एक दूसरे की

होता खड़ा रहता। साबित आए तो वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़रीब बैठने के लिये लोगों को हटाते हुए येह कहते चले कि जगह दो जगह दो यहां तक कि वोह हुज़ूर के क़रीब पहुंच गए और उन के और हुज़ूर के दरमियान में सिर्फ़ एक शख़्स रह गया, उन्हों ने उस से भी कहा कि जगह दो, उस ने कहा कि तुम्हें जगह मिल गई बैठ जाओ, साबित गुस्से में आ कर उस के पीछे बैठ गए और जब दिन ख़ूब रोशन हुवा तो साबित ने उस का जिस्म दबा कर कहा कि कौन ? उस ने कहा कि मैं फ़ुलां शख़्स हूं। साबित ने उस की मां का नाम ले कर कहा : फ़ुलानी का लड़का। इस पर उस शख़्स ने शर्म से सर झुका लिया और उस ज़माने में ऐसा कलिमा आ़र दिलाने के लिये कहा जाता था, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **दूसरा वाक़िआ़** ज़ह्हाक ने बयान किया कि येह आयत बनी तमीम के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ह़ज़रते अ़म्मार व ख़ब्बाब व बिलाल व सुहैब व सलमान व सालिम वग़ैरा ग़रीब सह़ाबा की ग़ुरबत देख कर उन के साथ तमस्ख़ुर करते थे, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि मर्द मर्दों से न हंसें या'नी मालदार ग़रीबों की हंसी न बनाएं, न आ़ली नसब ग़ैर ज़ी नसब की, न तन्दुरुस्त अपाहज की, न बीना उस की जिस की आंख में ऐब हो। **19 :** सिद्क़ो इख़्लास में। **20 : शाने नुज़ूल :** येह आयत उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते हुयय رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के ह़क़ में नाज़िल हुई। इन्हें मा'लूम हुवा था कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा ने इन्हें यहूदी की लड़की कहा, इस पर इन्हें रन्ज हुवा और रोईं और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से शिकायत की तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम नबी ज़ादी और नबी की बीबी हो तुम पर वोह क्या फ़ख़्र करती हैं और ह़ज़रते ह़फ़्सा से फ़रमाया : ऐ ह़फ़्सा ! ख़ुदा से डरो। (التِّرمِذِی وَقَالَ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ) **21 :** एक दूसरे पर ऐब न लगाओ अगर एक मोमिन ने दूसरे मोमिन पर ऐब लगाया तो गोया अपने ही आप को ऐब लगाया। **22 :** जो उन्हें ना गवार मा'लूम हों। **मसाइल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो उस को बा'दे तौबा उस बुराई से आ़र दिलाना भी इस नही में दाख़िल और मम्नूअ़ है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसल्मान को कुत्ता या गधा या सुअर कहना भी इसी में दाख़िल है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसल्मान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो, लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों मम्नूअ़ नहीं जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र का लक़ब अ़तीक़ और ह़ज़रते उ़मर का फ़ारूक़ और ह़ज़रते उ़स्मान का ज़ुन्नूरैन और ह़ज़रते अ़ली का अबू तुराब और ह़ज़रते ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अ़लम हो गए और साह़िबे अल्क़ाब को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी मम्नूअ़ नहीं जैसा कि आ'मश, आ'रज। **23 :** तो ऐ मुसल्मानो किसी मुसल्मान की हंसी बना कर या उस को ऐब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ। **24 :** क्यूं कि हर गुमान सह़ीह़ नहीं होता **25 मस्अला :** मोमिने सालेह़ के साथ बुरा गुमान मम्नूअ़ है इसी त़रह़ इस का कोई कलाम सुन कर फ़ासिद मा'ना मुराद लेना बा वुजूदे कि उस के दूसरे सह़ीह़ मा'ना मौजूद हों और मुसल्मान का ह़ाल उन के मुवाफ़िक़ हो येह भी गुमाने बद में दाख़िल है। सुफ़्यान सौरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : गुमान दो त़रह़ का है **एक** वोह कि दिल में आए और ज़बान से भी कह दिया जाए, येह अगर मुसल्मान पर बदी के साथ है गुनाह है। **दूसरा** येह कि दिल में आए और ज़बान से न कहा जाए येह अगर्चे गुनाह नहीं मगर इस से भी दिल ख़ाली करना ज़रूर है। **मस्अला :** गुमान की कई क़िस्में हैं : **एक वाजिब** है वोह **अल्लाह** के साथ अच्छा गुमान रखना। **एक मुस्तह़ब** वोह मोमिने सालेह़ के साथ नेक गुमान। **एक मम्नूअ़ ह़राम** वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ बुरा गुमान करना और मोमिन के साथ बुरा गुमान करना **एक जाइज़** वोह फ़ासिक़े मो'लिन के साथ ऐसा गुमान करना जैसे अफ़्आ़ल उस से ज़ुहूर में आते हों। **26 :** या'नी मुसल्मानों की ऐबजूई न करो और उन के छुपे ह़ाल की जुस्तजू में न रहो जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी सत्तारी से छुपाया। ह़दीस शरीफ़ में है : गुमान से बचो गुमान बड़ी झूटी बात है और मुसल्मानों की ऐबजूई न करो उन के साथ ह़िर्स व ह़सद बुग़्ज़ बे मुरव्वती न करो, ऐ **अल्लाह** तआ़ला के बन्दो ! भाई बने रहो जैसा तुम्हें हुक्म

www.dawateislami.net

بَعْضًا ؕ اَیُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ یَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِیْهِ مَیْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ

ग़ीबत न करो[27] क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा[28]

وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ

और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है ऐ लोगो ! हम ने तुम्हें एक मर्द[29]

مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ

और एक औरत[30] से पैदा किया[31] और तुम्हें शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो[32] बेशक अल्लाह के यहां तुम में

عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ ﴿۱۳﴾ قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ

ज़ियादा इज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है[33] बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बरदार है गंवार बोले हम ईमान लाए[34]

दिया गया मुसल्मान मुसल्मान का भाई है इस पर ज़ुल्म न करे इस को रुस्वा न करे इस की तह्क़ीर न करे (फिर अपने सीने की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया) तक़्वा यहां है तक़्वा यहां है तक़्वा यहां है। आदमी के लिये येह बुराई बहुत है कि अपने मुसल्मान भाई को ह़क़ीर देखे, हर मुसल्मान मुसल्मान पर ह़राम है इस का ख़ून भी इस की आबरू भी इस का माल भी अल्लाह तआ़ला तुम्हारे जिस्मों और सूरतों और अ़मलों पर नज़र नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नज़र फ़रमाता है। (بخاری ومسلم) **ह़दीस :** जो बन्दा दुन्या में दूसरे की पर्दापोशी करता है अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा। **27 :** ह़दीस शरीफ़ में है कि ग़ीबत येह है कि मुसल्मान भाई की पीठ पीछे ऐसी बात कही जाए जो उसे ना गवार गुज़रे अगर वोह बात सच्ची है तो ग़ीबत है वरना बोहतान। **28 :** तो मुसल्मान भाई की ग़ीबत भी गवारा न होनी चाहिये क्यूं कि इस को पीठ पीछे बुरा कहना इस के मरने के बा'द इस का गोश्त खाने के मिस्ल है क्यूं कि जिस त़रह़ किसी का गोश्त काटने से उस को ईज़ा होती है इसी त़रह़ उस को बदगोई से क़ल्बी तक्लीफ़ होती है और दर ह़क़ीक़त आबरू गोश्त से ज़ियादा प्यारी है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब जिहाद के लिये रवाना होते और सफ़र फ़रमाते तो हर दो मालदारों के साथ एक ग़रीब मुसल्मान को कर देते कि वोह ग़रीब उन की ख़िदमत करे वोह इसे खिलाएं पिलाएं हर एक का काम चले, इसी त़रह़ ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दो आदमियों के साथ किये गए थे, एक रोज़ वोह सो गए और खाना तय्यार न कर सके तो उन दोनों ने इन्हें खाना त़लब करने के लिये रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, ह़ुज़ूर के ख़ादिमे मत़्बख़ ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे, उन के पास कुछ रहा न था, उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे पास कुछ नहीं। ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येही आ कर कह दिया तो उन दोनों रफ़ीक़ों ने कहा कि ह़ज़रते उसामा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ने बुख़्ल किया, जब वोह ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, फ़रमाया : मैं तुम्हारे मुंह में गोश्त की रंगत देखता हूं, उन्हों ने अ़र्ज़ किया हम ने गोश्त खाया ही नहीं, फ़रमाया : तुम ने ग़ीबत की और जो मुसल्मान की ग़ीबत करे उस ने मुसल्मान का गोश्त खाया। **मस्अला :** ग़ीबत बिल इत्तिफ़ाक़ कबाइर (कबीरा गुनाहों) में से है, ग़ीबत करने वाले को तौबा लाज़िम है। एक ह़दीस में येह है कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा येह है कि जिस की ग़ीबत की है उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत करे। **मस्अला :** फ़ासिक़े मो'लिन के ऐ़ब का बयान ग़ीबत नहीं। ह़दीस शरीफ़ में है कि फ़ाजिर के ऐ़ब बयान करो कि लोग उस से बचें। **मस्अला :** ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि तीन शख़्सों की ह़ुर्मत नहीं : **एक** साहि़बे हवा (बद मज़्हब)। **दूसरा** फ़ासिक़े मो'लिन। **तीसरा** बादशाहे ज़ालिम या'नी इन के उ़यूब बयान करना ग़ीबत नहीं। **29 :** ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام **30 :** ह़ज़रते ह़व्वा **31 :** नसब के इस इन्तिहाई दरजे पर जा कर तुम सब के सब मिल जाते हो तो नसब में तफ़ाख़ुर और तफ़ाज़ुल की कोई वज्ह नहीं, सब बराबर हो एक जद्दे आ'ला की औलाद। **32 :** और "एक" "दूसरे" का नसब जाने और कोई अपने बाप दादा के सिवा दूसरे की त़रफ़ अपनी निस्बत न करे, न येह कि नसब पर फ़ख़्र करे और दूसरों की तह्क़ीर करे, इस के बा'द उस चीज़ का बयान फ़रमाया जाता है जो इन्सान के लिये शराफ़त व फ़ज़ीलत का सबब और जिस से उस को बारगाहे इलाही में इ़ज़्ज़त ह़ासिल होती है। **33 :** इस से मा'लूम हुवा कि मदार इ़ज़्ज़तो फ़ज़ीलत का परहेज़ गारी है न कि नसब। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने बाज़ारे मदीना में एक ह़बशी ग़ुलाम मुलाह़ज़ा फ़रमाया जो येह कह रहा था कि जो मुझे ख़रीदे उस से मेरी येह शर्त़ है कि मुझे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इक़्तिदा में पांचों नमाज़ें अदा करने से मन्अ़ न करे, उस ग़ुलाम को एक शख़्स ने ख़रीद लिया फिर वोह ग़ुलाम बीमार हो गया तो सय्यिदे आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस की इ़यादत के लिये तशरीफ़ लाए, फिर उस की वफ़ात हो गई और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के दफ़्न में तशरीफ़ लाए, इस पर लोगों ने कुछ कहा, इस पर येह आयते

www.dawateislami.net

قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ لٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَ لَمَّا یَدْخُلِ الْاِیْمَانُ فِیْ

तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए[35] हां यूं कहो कि हम मुतीअ़ हुए[36] और अभी ईमान तुम्हारे दिलों में

قُلُوْبِكُمْؕ وَ اِنْ تُطِیْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَا یَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَیْــٴًـاؕ

कहां दाख़िल हुवा[37] और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करोगे[38] तो तुम्हारे किसी अ़मल का तुम्हें नुक़्सान न देगा[39]

اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ

बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है ईमान वाले तो वोही हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर

رَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ یَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ

ईमान लाए फिर शक न किया[40] और अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में

اللّٰهِؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِیْنِكُمْؕ وَ اللّٰهُ

जिहाद किया वोही सच्चे हैं[41] तुम फ़रमाओ क्या तुम अल्लाह को अपना दीन बताते हो और अल्लाह

یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۶﴾

जानता है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है[42] और अल्लाह सब कुछ जानता है[43]

یَمُنُّوْنَ عَلَیْكَ اَنْ اَسْلَمُوْاؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَیَّ اِسْلَامَكُمْۚ بَلِ اللّٰهُ

ऐ महबूब वोह तुम पर एह़सान जताते हैं कि मुसल्मान हो गए तुम फ़रमाओ अपने इस्लाम का एह़सान मुझ पर न रखो बल्कि अल्लाह

یَمُنُّ عَلَیْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِیْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ

तुम पर एह़सान रखता है कि उस ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो[44] बेशक अल्लाह

करीमा नाज़िल हुई। 34 **शाने नुज़ूल :** येह आयत बनी असद बिन ख़ुज़ैमा की एक जमाअ़त के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ख़ुश्क साली के ज़माने में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने इस्लाम का इज़्हार किया और ह़क़ीक़त में वोह ईमान न रखते थे, उन लोगों ने मदीने के रस्ते में गन्दगियां कीं और वहां के भाव गिरां कर दिये, सुब्ह़ो शाम रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ कर अपने इस्लाम लाने का एह़सान जताते और कहते हमें कुछ दीजिये, उन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। 35 : सिद्क़े दिल से 36 : ज़ाहिर में 37 **मस्अला :** मह़ज़ ज़बानी इक़्रार जिस के साथ क़ल्बी तस्दीक़ न हो मो'तबर नहीं इस से आदमी मोमिन नहीं होता, इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी इस्लाम के लुग़वी मा'ना हैं और शरई मा'ना में इस्लाम और ईमान एक हैं कोई फ़र्क़ नहीं। 38 : ज़ाहिरन व बात़िनन सिद्क़ो इख़्लास के साथ, निफ़ाक़ को छोड़ कर 39 : तुम्हारी नेकियों का सवाब कम न करेगा 40 : अपने दीन व ईमान में 41 : ईमान के दा'वे में। **शाने नुज़ूल :** जब येह दोनों आयतें नाज़िल हुईं तो आ'राब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और उन्हों ने क़समें खाईं कि हम मोमिने मुख़्लिस हैं, इस पर अगली आयत नाज़िल हुई और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को ख़ित़ाब फ़रमाया गया : 42 : उस से कुछ मख़्फ़ी नहीं 43 : मोमिन का ईमान भी और मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ भी, तुम्हारे बताने और ख़बर देने की ह़ाजत नहीं। 44 : अपने दा'वे में।

www.dawateislami.net

يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ ع

जानता है आस्मानों और ज़मीन के सब ग़ैब और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है[45]

اٰیاتھا ٤٥ | ٥٠ سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ ٣٤ | رکوعاتھا ٣

सूरए ق मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और तीन रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ

इ़ज़्ज़त वाले क़ुरआन की क़सम[2] बल्कि उन्हें इस का अचम्बा (तअ़ज्जुब) हुवा कि उन के पास उन्ही में का एक डर सुनाने वाला तशरीफ़ लाया[3] तो

الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَیْءٌ عَجِیْبٌ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ

काफ़िर बोले येह तो अ़जीब बात है क्या जब हम मर जाएं और मिट्टी हो जाएंगे फिर जियेंगे यह पलटना

بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ

दूर है[4] हम जानते हैं जो कुछ ज़मीन उन में से घटाती है[5] और हमारे पास एक याद रखने वाली

حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِیْۤ اَمْرٍ مَّرِیْجٍ ﴿٥﴾ اَفَلَمْ

किताब है[6] बल्कि उन्हों ने ह़क़ को झुटलाया[7] जब वोह उन के पास आया तो वोह एक मुज़्तरिब बे सबात बात में हैं[8] तो क्या

يَنْظُرُوْۤا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾

उन्हों ने अपने ऊपर आस्मान को न देखा[9] हम ने उसे कैसा बनाया[10] और संवारा[11] और उस में कहीं रख़्ना नहीं[12]

45 : उस से तुम्हारा कोई ह़ाल छुपा नहीं न ज़ाहिर न मख़्फ़ी। **1 :** "सूरए قٓ" मक्किय्या है, इस में तीन रुकूअ़, पेंतालीस आयतें, तीन सो सत्तावन कलिमे और एक हज़ार चार सो चोरानवे ह़र्फ़ हैं। **2 :** हम जानते हैं कि कुफ़्फ़ारे मक्का सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान नहीं लाए। **3 :** जिस की अ़दालत व अमानत और सिद्क़ व रास्त बाज़ी को वोह ख़ूब जानते हैं और येह भी उन के दिल नशीन है कि ऐसे सिफ़ात का शख़्स सच्चा नासेह होता है बा वुजूद इस के उन का सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और हुज़ूर के इन्ज़ार (डराने) से तअ़ज्जुब व इन्कार करना क़ाबिले हैरत है। **4 :** उन की इस बात के रद व जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **5 :** या'नी उन के जिस्म के जो हिस्से गोश्त ख़ून हड्डियां वग़ैरा ज़मीन खा जाती है, उन में से कोई चीज़ हम से छुपी नहीं तो हम उन को वैसे ही ज़िन्दा करने पर क़ादिर हैं जैसे कि वोह पहले थे। **6 :** जिस में उन के अस्मा आ'दाद और जो कुछ उन में से ज़मीन ने खाया सब साबित व मक्तूब व मह़फ़ूज़ है। **7 :** बिग़ैर सोचे समझे और ह़क़ से मुराद या नुबुव्वत है जिस के साथ मो'जिज़ाते बाहिरात हैं या क़ुरआने मजीद। **8 :** तो कभी नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को शाइर, कभी साहिर, कभी काहिन और इसी त़रह क़ुरआने पाक को शे'र व सेह़र व कहानत कहते हैं किसी एक बात पर क़रार नहीं। **9 :** चश्मे बीना व नज़्रे ए'तिबार से कि इस की आफ़रीनिश में हमारी क़ुदरत के आसार नुमायां हैं। **10 :** बिग़ैर सुतून के बुलन्द किया **11 :** कवाकिब के रोशन अजराम से। **12 :** कोई ऐ़ब व क़ुसूर नहीं।